हिंदी की शब्द - संपदा

हिंदी की शब्द – संपदा बहुत समृद्ध है, और इसमें निरंतर वृध्दि हो रही है। किसी भी भाषा की लघुतम स्वतंत्र सार्थक इकाई है – "शब्द"

भाषा के निर्माणक तत्वों में शब्द का स्थान महत्वपूर्ण है। जिस भाषा की शब्द – संपदा जितनी समृद्ध होती है वह उतनी ही श्रेष्ठ होती है। शब्द – संपदा की समृद्धि भाषा – भाषियों के बौद्धिक, भावात्मक और सांस्कृतिक उत्थान में सहायक सिद्ध होती है। साहित्य सृजन हेतु भी किसी भी भाषा की शब्द – संपदा की समृद्धि अत्यंत महत्वपूर्ण है। शब्दों की बहुलता और प्रचुरता से भाषा और भी अधिक सुसम्पन्न और समृद्धिशाली होती है। शब्द – संपदा की वृध्दि से भाषा के लालित्य, चमत्कार, अर्थगौरव, अभिव्यंजना शक्ति और अर्थ – गाम्भीर्य में वृध्दि होती है, साथ ही शब्दों की व्यंजना शक्ति, भाषा – चमत्कार एवं कलात्मक शक्ति में भी बढ़ोतरी होती जाती है।

अलग -अलग दृष्टि से शब्दों के भेद किए गए हैं। अंग्रेजी व्याकरण के अनुसार शब्दों के आठ भेद हैं। संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, क्रियाविशेषण, संबंधसूचक अव्यय, समुच्चय बोधक अव्यय,विस्मयादिबोधक अव्यय। हिंदी में भी इन भेदों को सहजता से स्वीकार कर लिया गया है।

रचना की दृष्टि से शब्द के तीन भेद हैं – रूढ़, यौगिक और योगरूढ़।

जिन शब्दों का सार्थक खंड न हो सके वे रूढ़ हैं। जैसे – जल, हाथ आदि।

जिन शब्दों के सार्थक खंड हो सकें वे यौगिक। जैसे – विद्यालय, रसोईघर आदि।

जिन शब्दों के सार्थक खंड हों पर वे शब्द विशेष अर्थ के द्योतक हों तो ऐसे शब्द योगरूढ़ कहलाते हैं। जैसे – पंकज। यहाँ पंक + ज का अर्थ है – कीचड़ में जन्मलेने वाला, परंतु पंकज का विशेष अर्थ है – कमल।

शब्द शक्ति की दृष्टि से शब्द के तीन अर्थ हैं – वाचक, लक्षक और व्यंजक।

वाचक में शब्द का रूढ़ अर्थात यादृच्छिक अर्थ होता है। जैसे – जल कहते ही अर्थ प्राप्त होता है पानी।

लक्षक में लक्षणा से अर्थ निकलता है। यहाँ मुख्य अर्थ में बाधा होती है और गुण अथवा धर्म से अर्थ निकलता है। जैसे – सीता गाय है। यहाँ मुख्य अर्थ में बाधा है, सीता गाय नहीं हो सकती, परंतु सीधेपन के गुण के कारण उसे गाय कहा गया है।

व्यंजक शब्दों में व्यंजना से अर्थ निकलता है। जैसे सास कहती है – सूर्यास्त हो गया तो बहू दिया जला लेती है।

ऐतिहासिक दृष्टि से शब्द के चार भेद होते हैं –

तत्सम, तद्भव, देशज और विदेशज।

तत्सम शब्द वे हैं जो संस्कृत से उसी रूप में ले लिए गए हैं। जैसे – अश्व, जननी, वृक्ष, कन्या, अग्नि, पृथ्वी, पुष्प आदि।

तद्भव ऐसे शब्द हैं जिनका मूल संस्कृत है, परंतु जो पालि, प्राकृत, अपभ्रंश आदि भाषाओं के माध्यम से आए हैं।

जैसे – सूरज, भाई, घर आदि।

देशज वे शब्द हैं, जिनकी व्युत्पत्ति का पता नहीं चलता है। जैसे – थोथा, भोंदू आदि।

विदेशज वे शब्द हैं जो अन्य देश की भाषाओं से हिंदी में आए हैं। जैसे – इंजन, एजेंट, कॉपी आदि।

भाषा के प्रयोजनमूलक रूप से भी अनेक शब्द प्रकार सामने आए हैं। जैसे - पारिभाषिक शब्द।

पारिभाषिक शब्द के भी दो भेद हैं – पूर्ण पारिभाषिक और अर्ध पारिभाषिक।

पूर्ण पारिभाषिक शब्द किसी शास्त्र या विज्ञान में निश्चित अर्थ में प्रयोग किया जाता है। जैसे – काव्यशास्त्र में – लक्षणा, रसायनविज्ञान में कार्बनडाइऑक्साइड आदि।

अर्ध पारिभाषिक शब्द वे हैं जो किसी शास्त्र या विज्ञान में पारिभाषिक शब्द के रूप में प्रयोग किये जाते हैं परंतु सामान्य प्रयोग में उनके अर्थ बदल जाते हैं। जैसे – रस। काव्यशास्त्र में पारिभाषिक शब्द है परंतु सामान्य प्रयोग में इसका अर्थ बदल जाता है।

इन सबके अतिरिक्त शब्द का एक प्रकार है – आधारभूत शब्द। आधारभूत शब्दों में दैनिक जीवन में व्यवहार किए जाने वाले शब्द होते हैं। उपर्युक्त सभी दृष्टियों से हिंदी की शब्द – संपदा पर्याप्त समृद्ध है।